Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वै
86

ॐ

नेहरूयोग प्रदीप

इसमें बीकानेर प्रान्तीय आयुर्वेद परिषद् में विविध वैद्यराजों द्वारा बताए हुए तथा जाँच कमेटी के द्वारा चुने हुए स्नायू नाशक सविधि १६ अनुभूत योग हैं।

प्रकाशक—

श्री नवजीवन औषधालय जाट विद्यालय
संगरिया, बीकानेर

मूल्य =)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ॐ

नेहरू रोग से परिपीड़ित जनता पर विशेषरूप से ध्यान देते हुए श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज की प्रेरणा से जाट विद्यालय संगरिया बीकानेर में वार्षिकोत्सव के साथ २ ता० ३ सितम्बर सन् १९४४ ई० में वैद्यराज श्री पं० चन्द्रशेखर जी शास्त्री भिषगाचार्य बीकानेर के सभापतित्व में बीकानेर प्रान्तीय नाहरवा परिषद् सम्पन्न हुई। उसमें विभिन्न वैद्यराजों द्वारा नेहरू के विषय में जो निबन्ध पढ़े गए, उनमें से भी जांच कमेटी के द्वारा चुने हुये (स्नायुक) नेहरू नाशक विविध अनुभूत सिद्ध योग और उनकी सेवन विधि जो बतलाई गई वह निम्न प्रकार है।

योग नं० १—कपूर (कर्पूर) देशी डली वाला ६ माशा खाण्ड १ तोला इसकी ३ पुड़िया बनाकर एक ही दिन में तीन तीन घंटे के अन्तर से तीनों पुड़िया ठंडे जल के साथ लेनी चाहिये। पुड़ियों के साथ पिया जावे उसके अतिरिक्त जल तथा भोजन उस दिन बंद रखनां चाहिये। दूसरे दिन चावल कण की रोटी दलिया दूध खाण्ड आदि पथ्य वस्तुवें खिलावें। नमक लालमिर्च गुड़ तैल खटाई आदि वस्तुवें छोड़दें। प्याजों को गोमूत्र में पकाकर ७ दिन तक नेहरू पर पट्टी बांधना चाहिये यह योग नेहरू पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रत्येक अवस्था में अत्यन्त ही लाभ प्रद सिद्ध हुआ है और इससे प्रति शत रोगी ठीक हो जाते हैं।

नं० २—शुद्ध गन्धक नौसादर फूला सत लोवान उड़ा हुआ कपूर दालचिनी का चूर्ण सबको बराबर लेकर पीस कपड़ छान कर ३ माशा की एक मात्रा सुबह तथा एक मात्रा शाम को इस प्रकार ७ दिन ठंडे पानी के साथ लेने से नेहरू कभी नहीं होगा। यदि पानी के द्वारा कीट शरीर में गया हुवा होगा तो भी शीघ्र ही निकल जावेगा और फिर नहीं होगा। अनुपान दूध चावल मूंग की दाल कण की रोटी है।

नमक लालमिर्च खटाई गुड़ तैल आदि छोड़ देना चाहिए।

नं० ३—हींग सुहागा क्षार दोनों को बराबर लेकर एक एक माशा सुबह शाम ठंडे जल के साथ लेने से नेहरू रोग शान्त हो जाता है।

नं० ४—अमलतास चित्ते की जड़ शुद्ध गन्धक इनको समान भाग लेकर चूर्ण बनाकर चार माशा सुबह तथा चार माशा शाम को शीतल पानी के साथ लेने से नेहरू चला जाता है। उपरोक्त चारों प्रयोग वैद्यराज चन्द्रशेखर जी भिषगाचार्य के परीक्षित हैं।

नं० ५—तिल तैल १ सेर सिन्दूर एक पाव साबुन अच्छी मैदे की एक पाव हींग हीरा अच्छी चमकदार १ छटांक। बनाने की विधि—हींग को महीन पीस कर चलनी में छान लें। साबुन को साग की तरह टुकड़े करलें। तैल कढ़ाई में डालकर १ घंटे तक तीव्र अग्नि से पकावें। झागमिटकर भाफ उठने लगे तब हींग डाल दें ५ मिनट में ही हींग स्याह काली हो जावेगी। फिर आग तमाम दूर करके सिन्दूर डाल दें और कोंचे से चलाते रहें ५ मिनट में ही सिन्दूर स्याह काला हो जावेगा। फिर साबुन डाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दें अग्नि नीचे मंदी कर दें। आध घंटे तक आगपर रखें और कोंचे से चलाते रहें फिर कढ़ाई उतार कर ठंडी होने पर डब्बा में डाल देवें।

विशेष सूचना—जिस कढ़ाई में एक सेर तैल की दवाई बनावें वह कढ़ाई १० सेर पानी समावे इतनी बड़ी होनी चाहिए।

कोंचा लम्बा होना चाहिये जिससे हाथ में छींटे न लग सकें। हवा कम चले उस दिन दवाई बनाई जावे तो अच्छा रहे।

प्रयोग विधि

नाहरवे का फाला फूटने के बाद घाव को नीम के गर्म पानी से धोकर सुखालें। दवाई को एक कपड़े की कागली पर लगाकर थोड़ी सी गर्म करके घाव पर लगाकर उस पर रूई लगावें और पट्टी बांध देवें जिससे दवाई उतर न सके। पट्टी को दूसरे या तीसरे दिन खोल कर हवा न लगने दें और उसी प्रकार पट्टी बांध देवें और पानी न लगने दें।

इस प्रकार तीन या चार पट्टियों में नाहरवा चला जाता है। नाहरवा यदि पैरों में हो तो चले फिरे कम और यदि हाथ में हो तो हाथ से भार कम उठावे।

यह मरहम लाला हरदेव सहाय जी हिस्सार की हजारों रोगियों पर सुपरीक्षित है।

नं० ६—डीकामली गोंद १ तोला गुड़ १ तोला इसके ३ भाग करके अर्थात गोंदको गुड़ में मिला मिलाकर पानी के साथ दिन में ३ वार लेने से नेहरु रोग शान्त हो जाता है। यह योग (कुंवर) दीपसिंहजी रेवन्यू कमिश्नर श्री गङ्गानगर का सुपरीक्षित है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नं० ७—तलाबों के गन्दे पानी के न पीने से तथा अन्य पानी को छान कर पीने से यह रोग नहीं होता है।

नं० ८—सीप की भस्म १ माशा सुबह तथा १ माशा शाम दही के साथ मिलाकर पीने से नेहरू रोग नष्ट होता है यह वैद्य रामगोपालजी आयुर्वेदाचार्य का सुपरीक्षित योग है।

नं० ९—काले सांप की कांचली की १ विन्दु जो चने के बराबर गोलाई में होती है पहिले दिन १ माशा गुड़ में १ विन्दु दूसरे दिन २ माशा गुड़ में २ विन्दु इस प्रकार क्रमशः बढ़ाते हुए ७ दिन तक खिलावे दवा के बिना गुड़ भी न खावे और तैल लाल मिर्च खटाई नमक आदि छोड़दे।
इस प्रकार पथ्य रखने से नेहरू अन्दर ही नष्ट हो जाता है। यदि सूजन हो तो इमली के पत्ते छाछ में पीसकर लेप करें इससे सूजन शीघ्र ही शान्त होजावेगी। यह योग आचार्य अनन्तरामजी वैद्य का सुपरीक्षित है।

नं० १०—इसरगोल १ छटांक साबुन देशी २ तोला हीङ्ग ६ माशा कपूर ३ माशा प्याज २ तोले सिन्दूर १ तोला रीठी कलिहारी की जड़ २ माशे इनको कूट कपड़ छान कर आवश्यकता नुसार पाव भर पानी में पकाकर गाढ़ा लेप करें। ऊपर से धतूर या एरण्ड के पत्ते बांधे इससे नेहरू गलकर बाहर निकल जाता है और सब प्रकार की वेदनाएं शान्त होजाती है। यह लेप वैद्य दाताराम जी आयुर्वेदाचार्य का सुपरीक्षित है।

नं० ११—कपूर टिकियों वाला ६ माशा खाण्ड ६ माशा सोना गेरू १ माशा इनको घोंट कर ३ पुड़िया बनालें। इनमें से १ पुड़िया सुबह तथा दूसरी दोपहर तथा तीसरी शाम को शीतल जल के साथ देवें उस दिन न तो भूख ही लगेगी और न प्यास ही लगेगी। यदि कमजोर मनुष्य हो तो पानी पिलाते रहें। लेकिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिसका हृदय कमजोर हो उसको यह योग नहीं देना चाहिये ऐसे मनुष्यों को प्रयः इससे मूर्च्छा होजाती है या वमन आरंभ हो जाती है।

दूसरे दिन यथेच्छ वस्तुवें खा सकते हैं किन्तु सैन्धव को छोड़ कर अन्य नमक लाल मिर्च गुड़ तैल खटाई आदि वस्तुवों से पहरेज रखना चाहिये। १ छटांक प्याज तथा एक माशा हल्दी एवं १ पाव गोमूत्र। प्याजों को कूटकर हल्दी और प्याजों को गोमूत्र में पकावे जब गाढ़े हो जावें तब नेहरू पर बांधे।

इस प्रकार ७ दिन तक पट्टी बांधे और ७ दिन तक ही पथ्य रक्खें।

नं० १२—कपूर ६ माशा सोनागेरू १ माशा इसकी ९ पुड़िया बनाकर सुबह दोपहर शाम को दिन में ३ वार, ३ दिन तक ठंडे पानी के साथ खिलावे इसमें किसी प्रकार पहरेज नहीं है किन्तु मिर्च लाल तैल गुड़ न खाना चाहिए। ये दोनों वैद्य लेखराम आयुर्वेदाचार्य के अनुभूत योग हैं इनसे सैकड़ों रोगियों को लाभ हुवा है।

नं० १३—हींग १ माशा गुड़ ६ माशा इसकी ९ गोलियां बनावे एक दिन में ३ गोली सुबह दोपहर शाम को ठंडे पानी से दें। और हींग को गोमूत्र में रगड़ कर लेप करें इससे लाभ अच्छा होता है। यह वैद्य जयदेवजी आयुर्वेदोपाध्याय अनुभूत योग है।

नं० १४—पुरानी बाजरी ३ तोला पुराना गुण ३ तोला वीरवधु (बुढ़िया माई) १ तोला मेथी २ तोला इन सबको महीन पीस कर पानी से चार २ रत्ती की गोलियां बनावें। प्रातः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सायं जल से एक एक गोली १० दिन तक दें। अवश्य ही लाभ होगा। यह योग वैद्य सूर्यपाल जी का अनुभूत है।

नं० १५—नेहरू का मुख टटोल कर त्वचा (खाल) को साधारण उकसाकर तन्तु को धागे से बांधकर खींचना चाहिये। यदि तन्तु अटक जावे तो ऊँट की जट गोमूत्र में गर्म कर तन्तु जहाँ पर फैला हुआ हो वहां पर बांध दे सेंक पहुँचने पर तन्तु बाहर आजाता है टूटने का ध्यान रखना चाहिए। टूटने पर वह उस अङ्ग को विकृत कर देता है।

इस विधि से देहाती लोग प्रायः नेहरू को निकाला करते हैं।

नं० १६—हींग १ तोला पुड़ पुराना १ तोला मयूर पंख की गुली १ तोला कपूर डली का १ तोला विना कढ़ा हुआ चूना १ तोला इन सबको कूट कर एक २ माशा की गोलियां बनालें पानी के साथ प्रतः सायं एक २ गोली ११ दिन तक देवें। यदि नेहरू के मुख नहीं होगा तो अन्दर ही जल जावेगा। यदि मुंह होगा तो नाहर बाहर निकल जावेगी। गर्म करके एरण्ड के पत्ते बाँधने चाहिए। इससे भी नेहरू चला जाता है।

औषधालय से गरीब जनता की निःस्वार्थ मुफ्त चिकित्सा की जाती है, जो लोग धनी हैं तथा खरीद कर अपने घर औषध लेना चाहें उनके लिए बिक्री विभाग है।

सर्व साधारण अनुपान

ज्वर में—शहद इलायची अथवा नागर मोथा पित्तपापड़ा।

सन्निपात में—तुलसी अदरख या पान का रस।

कास श्वास और श्लेष्म विकार में—अडूसे का रस और शहद अथवा सोंठ मिर्च पीपल और शहद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज्वर और विषम ज्वर मे—मधु और पीपली तुलसी का रस।

लौटे हुये बुखार में—चिरायता नागर मोथा, और पित पापड़ा।

संग्रहणी में—मट्ठा, बेल का रस या मुरब्बा।

वायु विकार में—लहसुन अदरख।

पित विकार में—घी मिश्री अथवा शहद इलायची।

कफ विकार में—शहद।

विषम ज्वर में—तुलसी का रस और मिश्री अथवा शहद।

कृमि रोग में—वाय विडंग अनन्नास के पत्तों का रस।

बवासीर में—चीता और शुद्ध भिलावा अथवा सूरण।

पाण्डु रोग में—मण्डूर लौहा अथवा मूली का रस।

क्षय में—शिलाजीत सितो पलादि, शहद आदि।

श्वास में—श्वास कुठार शर्वत भारंगी, और सोंठ।

प्रमेह मे—आँवला हल्दो और मिश्री।

प्यास मे—सोना पीपल की छाल अथवा मिट्टी के ढेले से बुझाया हुआ पानी।

ज्वर की प्यास में—लोहा अथवा पीपल की छाल तपाकर बुझाया हुआ पानी।

शूल में—करञ्ज हींग और घी।

आमबात में—गोमूत्र रेड़ी का तैल सौंठ गुड़।

त्रिदोष में—अदरख, पान अथवा तुलसी का रस।

बिष में—घी शहद, सोना, सिरस वृक्ष की छाल या पत्ती का रस।

खाँसी में—भटकटैया की जड़ तथा सोंठ, मिर्च, पीपल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बात व्याधी में—गूगल, लहसुन, घी राश्नादि काढ़ा

बात कफ में—हर्रा।

रक्त पित्त में—अड्रूसे का रस चौलाई की जड़ का रस चावल का धोवन।

अपस्मार और ज्वर शुद्धी में—बच, अकर करा, मधु कुली-जन, मुलेठी, ब्राह्मी, ।

उदर में—गोमूत्र, रेड़ी का तैल कुमारी या सब लवण भास्कर।

बात रक्त में—गुर्च, रेड़ी का तेल, खैर की छाल।

आर्दित वायु में—उड़द के बड़ा, मक्खन, मकरध्वज।

मेदो रोग मे—शहद और पानी, शिलाजीत, रसवत।

प्रदर में—पठानी लोध, चौराई की जड़, रसवत, । चावल का धोवन।

अरुची—अनार बिजौरा नींबू द्राक्षारिष्ट।

फोड़ा फुन्सी घाव—त्रिफला, गुग्गुल नीम का रस।

शोक में—मद्य, द्राक्षारिष्ट दूध।

अम्लपित्त में—मुन्नका अनार अंगूर, अविपत्ति कर चूर्ण।

मूत्र कृच्छ में—सतावर, गोखरु, कुम्हड़े का चूर्ण रस शिला जीत।

नेत्र रोग में—त्रिफला, त्रिफलादि घृत, गुलाब जल।

उन्माद में—पुराना घी, शंख पुष्पी ब्राह्मी बुद्धि वर्धक सार स्वातारिष्ट, सार स्वत चूर्ण।

निद्रानाश में—भैंस का दूध, बुद्धि वर्धक रस।

कुष्ट—खैर सार का काढ़ा नीम का पानी।

श्वेत कुष्ट—बाकुची।

अजीर्ण—नींद, उपवास, हरीत की, लवण भास्कर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वान्ती—लाई आंवले का रस शहद इलायची।

ज त्रुरोग—तीक्ष्ण नस्य।

पार्श्व शूल में—पोहकर मूल, अदरख, शहद।

मूर्छा में—शितोपचार, गुलाब जल, बुद्धि वर्धक रस।

शरीर की दुर्बलता—शितोपलादि, लवंगादि, शक्ति स ंजीवनी, बसन्त मालिनी, सोने का वर्क, मक्खन मिश्री।

पथरी और पेशाब मे चूने का जाना—शिलाजीत गोखरु, पाषण भेद कृच्छ कृपाण।

मूत्राधात पेशाब का बन्द होना—कुम्हड़े की जड़ का रस, गोखरु, शीतल चीनी, नरम मूली का रस कलमी शोरा आदि।

गुल्म—जवाखार, वरुण की छाल, घीकुँआर का गूदा।

गण्ड माला: व विद्रधि—कचनार की छाल विडंगारिष्ट।

हिचकी—लाख का रस सुर्मा तथा नवसादर-चूना नीबू के रस की नस्य देना और एक माशा पिलाना भी।

दाह—ठन्डा पानी गुलाब जल, मक्खन मिश्री, उशीरासव।

भगन्दर—कुत्ते की हड्डी, गदेह का खून, शंख पुष्पी का रस।

स्वर शुद्धी के लिए—पोहकर मूल, और शहद, बच ब्राह्मी, कुलीजंन।

शीत विकार—पान का रस और मिर्च तुलसी का रस और शहद।

वस्तिविकार में—शिलाजीत, एरण्ड तैल, गोखरु।

प्लीहा में—पीपल अथवा बरगद की कोमल जटा और। मूली तथा घीकुमार का गूदा, कुमार्यासव।

उरुक्षत—लाख, सितोपलादि, द्राक्षारिष्ट, च्यवन प्रास।

अतीसार—करैया की छाल बेल का मुरब्बा, सौंफ अर्क

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बात व्याधी में—गूगल, लहसुन, घी राश्नादि काढ़ा

बात कफ में—हर्रा।

रक्त पित्त में—अडूसे का रस चौलाई की जड़ का रस चावल का धोवन।

अपस्मार और ज्वर शुद्धी में—बच, अकर करा, मधु कुलीजन, मुलेठी, ब्राह्मी,।

उदर में—गोमूत्र, रेड़ी का तैल कुमारी या सब लवण भास्कर।

बात रक्त में—गुर्च, रेड़ी का तेल, खैर की छाल।

आर्दित वायु में—उड़द के बड़ा, मक्खन, मकरध्वज।

मेदो रोग मे—शहद और पानी, शिलाजीत, रसवत।

प्रदर में—पठानी लोध, चौराई की जड़, रसवत,। चावल का धोवन।

अरुची—अनार बिजौरा नींबू द्राक्षारिष्ट।

फोड़ा फुन्सी घाव—त्रिफला, गुग्गुल नीम का रस।

शोक में—मद्य, द्राक्षारिष्ट दूध।

अम्लपित्त में—मुनक्का अनार अंगूर, अविपत्ति कर चूर्ण।

मूत्र कृछ में—सतावर, गोखरु, कुम्हड़े का चूर्ण रस शिला जीत।

नेत्र रोग में—त्रिफला, त्रिफलादि घृत, गुलाब जल।

उन्माद में—पुराना घी, शंख पुष्पी ब्राह्मी बुद्धि वर्धक सार स्वातारिष्ट, सार स्वत चूर्ण।

निद्रानाश में—भैंस का दूध, बुद्धि वर्धक रस।

कुष्ट—खैर सार का काढ़ा नीम का पानी।

श्वेत कुष्ट—बाकुची।

अजीर्ण—नींद, उपवास, हरीत की, लवण भास्कर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वान्ती—लाई आंवले का रस शहद इलायची।

ज त्रुरोग—तीक्ष्ण नस्य।

पार्श्व शूल में—पोहकर मूल, अदरख, शहद।

मूर्छा में—शितोपचार, गुलाब जल, बुद्धि वर्धक रस।

शरीर की दुर्बलता—शितोपलादि, लवंगादि, शक्ति संजीवनी, वसन्त मालिनी, सोने का वर्क, मक्खन मिश्री।

पथरी और पेशाव मे चूने का जाना—शिलाजीत गोखरु, पाषण भेद कृच्छ कृपाण।

मूत्राघात पेशाब का बन्द होना—कुम्हड़े की जड़ का रस, गोखरु, शीतल चीनी, नरम मूली का रस कलमी शोरा आदि।

गुल्म—जवाखार, वरुण की छाल, घीकुँआर का गूदा।

गण्ड माला: व विद्रधि—कचनार की छाल विडंगारिष्ट।

हिचकी—लाख का रस सुर्मा तथा नवसादर—चूना नीबू के रस की नस्य देना और एक माशा पिलाना भी।

दाह—ठन्डा पानी गुलाब जल, मक्खन मिश्री, उशीरासव।

भगन्दर—कुत्ते की हड्डी, गदेह का खून, शंख पुष्पी का रस।

स्वर शुद्धी के लिए—पोहकर मूल, और शहद, वच ब्राह्मी, कुलीजंन।

शीत विकार—पान का रस और मिर्च तुलसी का रस और शहद।

वस्तिविकार में—शिलाजीत, एरण्ड तैल, गोखरु।

प्लीहा में—पीपल अथवा वरगद की कोमल जटा और। मूली तथा घीकुमार का गूदा, कुमार्यासव।

उरुक्षत—लाख, सितोपलादि, द्राक्षारिष्ट, च्यवन प्रास।

अतीसार—करैया की छाल वेल का मुरव्वा, सौंफ अर्क

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कन्धे गर्दन और भुजाओं की जकड़ में—मोचरस का नस्य अनुपान में भी मोच रस।

जुखाम में—श्रीखण्ड, तुलसी की चाय, पान का रस।

कृशता में—माँस रस, दूध मक्खन, द्राक्षासव।

मूषक विष में— ऊँटनी का पेशाब और दूध।

मुख रोग में—घी, नस्य, कुल्ले, शहद, इलायची।

जरा रोग में—घी, दूध, च्यावन प्रास, द्राक्षारिष्ट।

मन्दागिनी में—घी में भुन्ना हुआ अदरख, नमक।

युवा वस्था की रक्षा—मधु युक्त आँवला, च्वनप्रास।

नपुंसकता पर—अकर करा, जाय फल, जावित्री, असगन्ध इलायची, शहद।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री नवजीवन औषधालय जाट विद्यालय संगरिया

(बीकानेर का बिक्री विभाग)

सूची-पत्र

वटी

नाम औषध		रोग		मूल्य
अनुभवी वटी	...	विबन्ध ज्वर	...	१) तो०
अमृत संजीवनी वटी	...	ज्वरातिसार	...	१॥) "
अर्शोहनी वटी	...	अर्श	...	॥) "
महानिम्बादि वटी	...	"	...	१) "
आनन्द भैरव वटी	...	ज्वरातिसार	...	१) "
आय नाशिनी वटी	...	आयतिसार	...	॥) "
इच्छा भेदी रस	...	उदावर्त	...	१) "
उपदंशारि वटी	...	उपदंश	...	१॥) "
कासान्तक वटी	...	कास	...	॥) "
कल्याण वटी	...	सामान्य ज्वर	...	॥) "
कफ केतुरस	...	सन्निपात ज्वर	...	१) "
कपूर वटी	...	अतिसार	...	१॥) "
कुंकुमादि वटी	...	वात व्याधि	...	१॥) "
खदिरादि वटी	...	कास	...	॥) "
कैशोर गुगुलु	...	वातरक्त	...	॥) "
कांचनार गुगुलु	...	गलगण्ड	...	॥) "
कॉंकायनी वटी	...	गुल्म	...	॥) "

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम औषध		रोग		मूल्य
गन्धक वटी	...	अग्निमान्ध	....	।।।) तो०
चित्रकादि वटी	...	"	...	।।) "
चन्द्र प्रभा वटी	...	प्रमेह	...	१) "
चन्द्रकान्ता वटी	...	शिरोरोगि	...	१) "
चन्द्रामृत रस	...	कास	...	१।।) "
ज्वरांकुश रस	...	बिषयज्वर	...	१) "
दाड़िमी वटी	...	कास	...	।।।) "
तारकेश्वर रस	...	बहुमूत्र	...	५) "
निद्रोदय रस	...	अनिद्रा	...	२) "
प्लीहानाक वटी	...	प्लीहावृद्धि	...	१) "
भारती वटी	...	सामान्य ज्वर	...	।।।) "
मृत्युञ्जय रस	...	ज्वराति सार	...	१) "
महाशंख वटी	...	अग्निमान्ध	...	।।।) "
महायोगराज गुग्गुल	....	वातव्याधि	...	२) "
योगराज गुग्गुल	...	"	...	।।) "
महाज्वरांकुश रस	...	विषय ज्वर	...	५) "
यक्ष्मारि लोह वटी	...	यक्ष्मा	...	२) "
रेचनी वटी	...	विबन्ध ज्वर	...	।।।) "
लवङ्गादि वटी	...	कास	...	१) "
लक्ष्मी नारायण रस	...	प्रसूतज्वर	...	६) "
बृहत् कस्तूरी भैरव रस		सान्निपात	...	१५) "
विषम ज्वर कुठार	....	विषय ज्वर	...	१।।) "
श्वास कुठार रस	...	हिक्का श्वास	...	।।।) "
श्वास दावानल वटी	...	श्वास	...	१) "
सिद्ध प्राणेश्वर रस	...	ज्वरातिसार	...	२) "
सौवर्चक पाक वटी	...	अग्निमान्ध	...	।।।) "

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम औषध		रोग		मूल्य
वातारि गुगुल	...	आमवात	...	॥) तो०
यकृद्दरि लोह वटी	...	यकृत् प्लीहा	...	२॥) ”
प्रदरान्तक वटी		प्रदर		१) ”

चूर्ण

नाम औषध		रोग	मूल्य
अग्निसंदीपन	चूर्ण	अग्निमान्ध	॥।) ”
अविपत्तिकर	”	अम्लापित्त	१०) सेर
अमृतरज	”	प्रदर	१२) ”
अमृत कल्प	”	उदररोग	८) ”
आमान्तक	”	आमर्गतसार	८) ”
उशीरादि	”	रक्तपित्त	१०) ”
उष्णवातारिलाल	”	सूजाक	॥) तो०
उष्णवात भंजन	”	”	॥) ”
उष्णवातामृत	”	”	॥।) ”
एलादि	”	छर्दि	॥।) ”
कास कल्याण	”	कास	१६) सेर
जलातिक	”	कास	८ ”
कामदुधांरस	”	मूत्रकृच्छ्र	१) तो०
गंगाधर	”	ग्रहणी	॥।) ”
चौषठ् प्रहरी पीपल चूर्ण		जीर्णज्वर	२) ”
चपला	चूर्ण	उदररोग	॥।) ”
रजः प्रवर्तकं	”	प्रदर	॥।) ”
रक्त शोधक	”	रक्तविकार	॥) ”
लघुमृगाङ्क	”	शोथ	॥।) ”
वज्रक्षार	”	उदर रोग	१६) सेर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम औषध		रोग	मूल्य
बालसुधा	"	बाल रोग	॥) तो०
श्वेत ज्वरादि	"	विषमज्वर	॥) "
सितोपलादि	"	रक्तपित्तकास	२०) सेर
सुन्दर रेचन	"	उदावर्त	८) "
सेवती रेचन	"	"	८) "
हिंग्वष्टक	"	अग्निमान्ध	१२) "
क्षुधाबन्धु	"	अग्निमान्ध	१२) "
त्रिफला	"	नेत्र बिकार	५) "
निद्राकर	"	अनिद्रा	१) तो०
पुष्टिकर	"	प्रमेह	१६) सेर
मधुकादि	"	उदावर्त्त	६) "
मूत्रकर	"	पत्थरी	१२) "
मेह प्रहार	"	प्रमेह	२) तो०
मंजिष्ठादि	"	रक्तविकार	१२) सेर
रक्तरोधक	"	रक्तपित्त	२०) "
पाण्डुहन	"	पाण्डु	१२) "

अवलेह

नाम औषध	रोग	मूल्य
च्यवनप्राश	राजयक्ष्मा	६) सेर
द्राक्षावलेह	उन्माद	६) "
ब्राह्मरसायन	रसायन	७) "
अग्निवर्धकावलेह	अरोचक	१६) "
वासावलेह .	राजयक्ष्मा	६) "

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आसव— अरिष्ट

नाम औषध	रोग	मूल्य
अमृतारिष्ट	जीर्णज्वर	२) बोतल
अशोकारिष्ट	प्रदर	२) "
अंगूरासव	पौष्टिक	५) "
उदरामृत	उदर रोग	३) "
कुमार्यासव	उदरोग	२) "
गर्भ जीवन	गर्भरक्षक	४) "
द्राक्षासव	राजयक्ष्मा	२) "
द्राक्षारिष्ट	"	२॥) "
दशमूलारिष्ट	शूल	२॥) "
पार्थारिष्ट	हृद्रोग	२) "
मंजिष्ठारिष्ट	रक्तविकार	२) "
रोहितकारिष्ट	यकृत् प्लीहा	२) "
लोहासव	"	२) "
सारस्वतारिष्ट	उन्माद	२) "
वासारिष्ट	कास श्वास	२॥) "
मृतसंजीवनी सुधा	पौष्टिक	२॥) "

अर्क

नाम औषध	रोग	मूल्य
उसवार्क	रक्तविकार	१॥) बो०
दशमूलार्क	बातव्याधि	१) "
नयनसुधावारि	नेत्ररोग	१०) "
यकोयार्क	यकृत रोग	१) "
यवान्यर्क	उदर रोग	१।) "

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम औषध	रोग	मूल्य
शतपुष्पार्क	तृष्णादाह	१।) ”
ज्वरान्तकार्क	ज्वर	१) ”
पौदीनार्क	हैजा	१।) ”
क्षुद्राग्दि अर्क	मर्यादिक ज्वर	१।।) ”
	शर्वत	
अशोक शर्वत	प्रदर	२) बो०
खश शर्वत	तृष्णादाह	२।।) ”
गुलाब शर्वत	”	२।।) ”
चन्दन शर्वत	”	२।।) ”
बनप्सा शर्वत	ज्वर प्रतिश्याम	२) ”
	तैल	
अणुतैल	ऊर्ध्वङ्ग रोग	१६) सेर
चन्दनादि तैल	राजयक्ष्मा	२०) ”
चन्दन तैल	उष्णवात	१।।) तो०
पामहर तैल	रक्तविकार	१२) सेर
बादाम तैल	शिरोरोग	।।।) तो०
महालाक्षादि तैल	जी० ज्वर	१२) सेर
महानारायण तैल	बातव्याधि	१२) ”
व्रणराक्षस तैल	व्रण	२०) ”
षडविन्दू तैल	शिरोरोग	२०) ”
बसन्त कुसुमाकर तैल	महासुगन्धित	१६) ”
	पाक	
एरण्ड पाक	बातव्याधि	८) सेर
सुपारी पाक	प्रदर	८) ”
बादाम पाक	पौष्टिक	१६) ”

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम औषध	रोग	मूल्य
पौष्टिक पाक	,,	६) ,,
अश्वगन्धपाक	वातव्याधि	१२) ,,
शतावरी पाक	,,	२०) ,,
बाजीकरण पाक	वृष्य	२०) ,,
	घृत	
ब्राह्मी घृत	मस्तिष्क दौर्बल्य	१६) सेर
महाकल्याण घृत	उन्माद	१६) ,,
त्रिफला घृत	नेत्र विकार	८) ,,
शतावरी घृत	वातव्याधि	२०) ,,
फलघृत	वन्ध्यारोग	२०) ,,
	क्वाथ	
द्वादशांग क्वाथ	प्रतिश्याम	५) सेर
दशमूल क्वाथ	वात व्याधि	४) ,,
मंजिष्ठादि क्वाथ	रक्तविकार	४) ,,
महारास्नादि क्वाथ	वातव्याधि	६) ,,
क्षुद्रादि क्वाथ	मोतीझरा	६) ,,
	फुटकर	
चन्द्रोदयवर्ति	नेत्ररोग	१) तो०
शिरोर्तिहर रसायन	शिरोरोग	१) ,,
दद्रुहन लेप	दद्रु	१२) सेर
अर्कलवण	यकृत प्लीहा	८) ,,
दन्तमञ्जनं	दन्तविकार	८) ,,
गिलोयसत्व	ज्वरदाह	।।) तो०
दशांग लेप	व्रणशोथ	८) सेर
दन्तामृत द्रव	दन्तविकार	१) तो०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम औषध	रोग	मूल्य
नयनामृत द्रव	नेत्रविकार	॥) "
कृष्णाञ्जन	नेत्ररोग	४) "
पीताञ्जन	नेत्रविकार	१) "
क्षवपुनस्य	प्रतिश्याम	॥) "
श्रीबासरस	उष्णाबात	१) "
शशि प्रभायाम	शिरदर्द	।॥) शी०

रस और भस्म

अमुक भस्म	क्षयकास	८) तो०
आल भस्म	ज्वर	॥) "
कमर्दभस्म	शूल	।॥) "
कान्तिसारलोह भस्म	पाण्डुरक्तक्षय	५) "
नाग भस्म	प्रमेह	२) "
प्रवाल भस्म	उन्माद हृद्रोग	१) "
वंग भस्म	प्रमेह	४) "
ताम्रभस्म	श्वास कास	२॥) "
मुक्ताशक्ति भस्म	क्षयदौर्बल्य	॥।) "
मण्डूर भस्म	पाण्डुशोथ	।॥) "
मुक्ता भस्म	क्षयदौर्बल्य	७०) "
मयूर पुच्छ भस्म	श्वास	१॥) "
यशद भस्म	प्रमेह	१॥) "
रजत भस्म	दौर्बल्य	१०) "
रौगयात्तिक भस्म	क्षय	।॥) "
लोह भस्म	पाण्डु शोथ	२) तो०
विषाण भस्म	शूल	।॥) "
शंख भस्म	"	॥) "

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम औषध	रोग	मूल्य
स्वर्णमाक्षिक भस्म	ज्वर	।।।) "
त्रिवंगभस्म	प्रमेह	२) "
त्वक् भस्म	श्वास	१) "
कज्जली	योगवटी	१।) "
वचनकुठार	बायें	१।।) "
लघु बसन्त मालती	जीर्णज्वर	५) "
स्वर्णबसन्त मालती	जीर्णज्वर	२०) "
सिद्ध मकरध्वज	पौष्टिक	८०) "
स्वर्णवंग	प्रमेह रसायन	७) "
सिद्धगंगाधर रस	आयतिसार	१) "
तालचन्द्रोदय	कुष्ट	१५) "
मल्लचन्द्रोदय	श्वासकास	२०) "
रस सिन्दूर	क्षयदौर्बल्य	१५) "
स्वर्णचन्द्रोदय	"	५०) "
चन्दनादि लोह	राजयक्ष्मा	२) "
नवापस लोह	पाण्डुशोथ	२) "
यक्ष्मारिलोह	राजयक्ष्मा	२) "
पञ्चामृत पर्पटी	अग्निमान्ध	५) "
श्वासान्तक लोह	हिक्काश्वास	२) "
रसपर्पटी	संग्रहणी	३) "
मुक्तापिष्टी	क्षयदौर्बल्य	७०) "
मुक्ता शक्तिपिष्टी	"	१।।) "
प्रवाल पिष्टी	हृद्रोग दाह	१।) "

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

च्वन प्राश

यह श्वास, कास, स्वरभेद, उरःक्षत, क्षय, प्रतिश्याम, हृद् रोग, वीर्य दोष, मस्तिष्क, दौर्वल्य आदिरोगों में परम लाभकारी है। बच्चों के अङ्गो को बढ़ाता है और पुष्ट बनाता है। स्वस्थ पुरुषों को निरन्तर सेवन से दिल दिमाग व फेफड़ों को ताकत देता है। मात्रा १से २ तोला गोदुग्ध के साथ सुबह शाम मू० ६) सेर।

सुपारी पाक

स्त्रियों के प्रदर आदि सब विकारों में अत्यन्त उपयोगी है। जिन महिलाओं के श्वेत प्रदर रक्तप्रदर आदि के कारण सिर दर्द कमर दर्द अथवा समस्त शरीर में दर्द रहता हो मासिक धर्म ठीक समय पर न होता हो,अत्यन्त कमजोरी की हालत रहती हो, उनको इसके सेवन से सब प्रकार की तकलीफ मिट-कर सुन्दर सुडौल शरीर बनाता है। हमारे अशोकारिष्ट में भी यही गुण हैं।

द्राक्षासव

अत्यन्त स्वादिष्ट तथा स्वच्छ पेय है। कब्ज को दूर करके रक्त, स्फुर्ति, तथा भूख बढ़ाता है, दिल दिमाग तथा शरीर को शक्ति देता है। क्षय, श्वास, कास आदि रोगों को दूर करके फेफड़ों को शक्ति शाली बनाता है। आनिद्रा को नष्ट कर स्नायु मण्डल को मजबूत करता है। मात्र २ तोले भोजन के बाद २) बोतल।

मृतसंजीवनी सुधा

कास, श्वास, श्लेष्य ज्वर, स्नायु शौथिल्ये रक्त ह्रास हृदय दौर्वल्य आदि रोगों पर शीघ्र लाभकारी पेय है। मात्रा ६ माशा से २ तोला मूल्य २) बोतल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अमृतारिष्ट

जीर्ण ज्वर को दूर करके पाचन शक्ति तथा रक्त को बढ़ाता है।

कुमार्यासव

उदर सूल खांसी दमे पुराने कब्ज को दूर करके पाचन शक्ति बढ़ाता है तथा यकृत्, तिल्ली आदि विकारों पर अत्यन्त ही लाभकारी है। मात्रा १से २ तोला भोजन के बाद २) बोतल।

स्वर्ण वसन्त मालती

जीर्ण ज्वर, क्षय, राजयक्ष्मा, धातुगत ज्वर हृदयकी दुर्वलता आदि रोगों पर विशिष्ट लाभकारी है। मात्रा १ से २ रत्ती मधु के साथ २०) तोला।

कस्तूरी भैरव रस

कस्तूरी आदि से बनी हुई यह औषध मन्थर ज्वर (मोतीझरा) सन्निपात ज्वर प्रसूत ज्वर शीताङ्ग सन्निपात श्वासनक ज्वर, इन फ्लुएञ्जा आदि रोगों पर अत्यन्त ही लाभकारी है। मात्रा १ से २ गोली। २० तो०

गर्भ जीवन

यह गर्भवती स्त्रियों के सम्पूर्ण रोगों को मिटाकर गर्भ को पुष्ट बनाता है।

ब्राह्मरसायन

इसमें विशेष रूप से आंवला तथा हरड़ बड़ी का योग्य है। और कब्ज मिटाने के कारण यह च्यवन प्रास भी अधिक लाभ प्रद है। इसका प्रयोग विशेष करके कास, पीनस, धातुक्षय, अःक्षत, राजयक्ष्मा, धातुविकार, हृदय एवं मास्तिक की दुर्वलता आदि में किया जाता है शरीर को हृष्ट पुष्ट तथा दर्शनीय बनाता है। मात्रा ६ माशा से १॥ तोला—७) सेर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वृश्चिक दंश

बिच्छु के काटे हुए पर यह अत्यन्त ही लाभ प्रद है, ॥) शी०

सर्प दर्पनाशक

सापके काटे हुए पर यह अपना पूर्ण प्रभाव दिखाता है, इस से बचन या विरेचन के द्वारा सर्प विष बाहर आ जाता है १) शी०

साधारण नियम

सर्व सांधारण को उचित मूल्य पर विशुद्ध औषध मिल सकें, इसके लिए हम प्रत्येक स्थान में अपने यहां की एजेन्सी स्थापित करना चाहते हैं।

(१) हमारे औषधालय की एजेन्सी रखने वाले किसी भी एजेन्ट को सर्व प्रथम कम से कम १००) की औषध मंगानी होगी। पीछे बिक्री के अनुसार मंगा सकते हैं

(२) आर्डर देते समय ग्राहकों को चौथाई मूल्य पेशगी भेजना चाहिये।

(३) जो व्यक्ति हमारे स्थायी ग्राहक बनना चाहें वे हमारे औषधालय में ४) पेशगी जमा करादें। ऐसे स्थायी ग्राहकों को सबसे पूर्व बिना पेशगी लिए माल भेजा जाया करेगा। उन्हें मनिआर्डर से पेशगी रुपया भेजने का कष्ट न उठाना पड़ेगा। और जब स्थायी ग्राहकों से अपना नाम पृथक करना चाहेंगे तो उनको रुपये वापिस भेजदिए जावेंगे।

(४) कमसे कम २०) रु० तक की औषधियों को एक बार में खरीदने वाले ग्राहकों को १२॥) प्रतिशत कमीशन दिया जावेगा।

(५) प्रत्येक ग्राहक को औषधि मूल्य के अतिरिक्त पेकिङ्ग और पोस्टेज खर्च भी देना होगा।

(६) रेलवे द्वारा मार्ग की टूट फूट को छोड़ कर यदि हमारी कोई गल्ती होगी तो पत्र द्वारा सूचित करने पर उसका प्रतिकार कर दिया जायगा और उचित क्षति की पूर्ति भी की जावेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(७) आर्डर देते समय ग्राहक अपना पूरा पता डाकखाना जिला रेलवे स्टेशन आदि सुन्दर साफ अक्षरों में लिखें।

विशेष जानकारी के लिए निम्न लिखित पते से पत्र व्यवहार करें।

मैनेजर

श्री नवजीवन औषधालय जाट विद्यालय
संगरिया बीकानेर

अंगूरासव

यह ताजा अंगूरों से बना हुवा सुमधुर और स्वादिष्ट पेय है। इसके सेवन से शारीरिक तथा मस्तिष्क सम्बन्धि कमजोरी नष्ट हो जाती हैं।

तथा रक्त बृद्धि होकर शरीर हृष्ट पुष्ट एवं सुन्दर हो जाता है।

नेत्राञ्जन

इसके लगाने से नेत्र सम्बन्धि बहुत से रोग नष्ट हो जाते हैं।

सूचीपत्र में निर्दिष्ट औषधों से पृथक भी आर्डर देने पर औषध तैयार करके भेजी जा सकेगी।

बिच्छु विषहरयोग

स्प्रीट १ बोतल में ताजा भरे हुए ७ बिच्छु डालकर तीन दिन बोतल को बन्द रक्खें चौथे दिन स्प्रीट को छानकर १ तोला पोटाशियम परमैंङ्गनेट २ तोला गन्धक का तिजाब तथा एक पात्र बकरी का मूत्र मिला दें और एक सप्ताह तक बोतल को बन्द रक्खें फिर छान कर छोटी २ शीशियों में भरदें इसका फावा बिच्छु के डंक पर लगाने से रोता हुवा आया हुआ हंसता हुवा जायगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पागल कुत्ते के विष पर

लाल मिर्च ३ माशा चूहे की मेंगनी ३ माशा कुचीला ३ माशा इनको पानी में पीसकर काटे हुए स्थान पर लगाकर बांधने से पागल कुत्ते का विष उत्तर जाता है।
पीने के लिए चूना कली से निकरा हुआ पानी देना चाहिए।

सब तरह के फोड़ों पर अचूक मरहम

घी चार छटाँक मोम १॥ तोला सिन्दूर २ तोला हिंगुल ६ माशा चौकिया सुहागा ६ माशा सफेद कत्था १ तोला मस्तंगी १ तोला मुरदासंग ६ माशा राल १ तोला।

विधि—घी, मोम, राल, को मंद मंद अग्नि से पकावे जब पिघल जावे तब सिन्दूर आदि चूर्ण महीन करके मिला देवें फिर इसको २१ बार जल में धोकर डब्बा में रखलें।
यह मरहम सब प्रकार के सड़े गले घावों को शुद्ध करके भर देता है।

सर्प विष नाशक योग

उसारे रेवन्द १ तोला रीठे के छिलके १ तोला हुक्के का गुल १ माशा विषलूये की जड़ १ माशा इन सब औषधियों को महीन पीस कर एक कांचकी शीशी में रखलें।

४ रत्ती से १ माशा की मात्रा दो घंटे बाद दूध के साथ देने से ३ मात्राओं से सर्प का विष उतर जाता है। इस योग से वमन तथा विरेचन दोनों एक साथ आरम्भ होते है, अतः रोगी को बार २ बकरी का दूध पिलाना चाहिये। प्यास लगने पर पानी न देकर दूधही पिलाना चाहिए।

इस उपचार से कैसे ही विषधर सर्प ने काटा हो उसका विष एक ही दिन में उतर जाता है।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Printed by S. M. Misra at the Bhugol Press.
Kakrahaghat, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE